

ऋग्वेद

मण्डल १, अनुवाक २४, सूक्त १८७ ।

अष्टक २, अध्याय ५, वर्ग ६ - ७ ।

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

Rigveda

Maṇḍala 1, Anuvaaka 24, Sookta 187.

Aṣṭaka 2, Adhyaaya 5, Varga 6 - 7.

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

There are two independent systems in place for classifying the 10522 Mantras from the Ṛigveda.

The first system has the Mantras broadly classified in Maṇḍalas. Each Maṇḍala has Anuvaakas which are further divided into Sooktas. However it is noteworthy that the Sooktas are numbered independently within a Maṇḍala and their numbering do not reset at the switchover of Anuvaakas. Due to this, many scholars consider Anuvaaka to be redundant and do not use them in their translations. There are a total of 10 Maṇḍalas, 85 Anuvaakas and 1028 Sooktas in the Ṛigveda. The sizes of the Maṇḍalas vary considerably between 429 Mantras to 1976 Mantras. The sizes of the Sooktas vary from 1 Mantra to 58 Mantras.

The second system tries to evenly distribute the Mantras between 8 Aṣṭakas which are further divided into 8 Adhyaayas each. These 64 Adhyaayas are further subdivided into 2024 Vargas. The normal size of a Varga is five Mantras, however, it varies from one to twelve Mantras with either extremes being rare.

Even though the second system does not have the Sookta classification, it honors the sanctity of a Sookta. One Sookta belongs to only one Aṣṭaka and one Adhyaaya. The Mantras from a Sookta may be further grouped into multiple Vargas. The Vargas however, do not mix Mantras from different Sooktas.

Nowadays, Maṇḍala / Anuvaaka / Sookta classification is more popular and has been used in this translation as well. However, the Aṣṭaka / Adhyaaya / Varga is mentioned in the page header for reference, if needed.

सारांश

इस सूक्त में सात्विक और पौष्टिक आहार के महत्त्व का वर्णन है । आहार ही ओषध है । सभी को उचित मात्रा में दूध, दही, घी आदि गौ जन्य पदार्थ और अन्य स्थानीय फल, सब्जी, अन्न आदि का भोजन में प्रयोग करना चाहिए । प्राकृतिक साधनों से उत्पन्न हुआ भोजन ही श्रेष्ठ है । भोजन स्वादिष्ट व रुचिकर होना चाहिए, परन्तु आवश्यकता से अधिक भोजन नहीं खाना चाहिए । भोजन से पहले हवि दे और फिर दूसरों को खिलाए । उसके उपरान्त बचा हुआ भोजन ही करना चाहिए । यथासम्भव भोजन अकेले न करें ।

छठे वर्ग का आरम्भ होता है ।

पहले मन्त्र में मन के नियन्त्रण में आहार की भूमिका का वर्णन है ।

अगस्त्य ऋषिः । ओषधयो देवताः । २८ अक्षराणि । आर्ष्युष्णिक् छन्दः । ऋषभः स्वरः ।

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् ।

यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥१॥

ऋग् १:२४:१८७:१, यजुः ३४:७

पितुम् । नु । स्तोषम् । महः । धर्माणम् । तविषीम् ॥

यस्य । त्रितः । वि । ओजसा । वृत्रम् । विपर्वमिति विऽपर्वम् । अर्दयत् ॥१॥

मैं शरीर के (पितुम्) रक्षक अन्न की (नु) (स्तोषम्) स्तुति करता हूँ । (यस्य) यह सात्विक अन्न मेरा शारीरिक व मानसिक (तविषीम्) बल बन मुझे (धर्माणम्) धार्मिक और (महः) महान् कार्यों के लिए सक्षम बनाता है । वेदोक्त भोजन मेरे (ओजसा) आत्मविश्वास और शक्ति को (वि) बढ़ा, मेरी (त्रितः) काम, क्रोध, द्वेष आदि (वृत्रम्) वृत्तियों को (विऽपर्वम्) खण्ड खण्ड (अर्दयत्) नष्ट कर, मुझे मोक्ष की ओर ले जाए ।

दूसरे मन्त्र में स्वादिष्ट व पौष्टिक आहार चुनने का निर्देश है ।

अगस्त्य ऋषिः । ओषधयो देवताः । २३ अक्षराणि । निचृदार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

स्वादो पितो मधो पितो वयं त्वा ववृमहे । अस्माकमविता भव ॥२॥

ऋग् १:२४:१८७:२

स्वादो इति । पितो इति । मधो इति । पितो इति । वयम् । त्वा । ववृमहे ॥ अस्माकम् । अविता । भव ॥२॥

Synopsis

This composition describes the importance of pure and nourishing food. Good food acts as medicine and keeps us free from sickness. Everyone should appropriately consume dairy products like milk, yogurt and butter and other locally produced fruits, vegetables, grains etc. Food organically grown under the care of Mother Nature is the best. Food should be delicious and appetizing, however, one should not overindulge. One should first share food with others before consuming it. Eating alone should be avoided as much as possible.

Here begins the sixth Varga.

In the first mantra the sage emphasizes on the role of *saatvik* food in channelizing thoughts and actions.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataaḥ** oṣhadhayah, **vowels** 28, **chhandah** aarṣhy uṣhṇik, **svarah** ṛiṣhabhah.

**1. pitun nu stoṣham maho dharmaanam taviṣheem,
yasya trito vyojasaa vṛitram viparvamardayat.**

Rig 1:24:187:1, Yajuh 34:7

pitun nu stoṣham mahah dharmaanam taviṣheem,
yasya tritah vi ojasaa vṛitram viparvam ardayat.

I (*nu*) (*stoṣham*) **praise the** (*pitum*) **food that protects the vitality and vigor in my body. The virtuous food, provides** (*taviṣheem*) **physical and mental strength and grants me the capability to engage in** (*dharmaanam*) **righteous and** (*mahah*) **superior actions. May this nutritious food** (*yasya*) **which conforms to the Vedic principles,** (*vi*) **increase my** (*ojasaa*) **confidence and power,** (*viparvam*) **bit by bit chip away and** (*ardayat*) **destroy the** (*vṛitram*) **vices like** (*tritah*) **lust, anger, jealousy etc. and lead me towards nirvana.**

In the second mantra the sage emphasizes that the food should be delicious as well as nourishing.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataaḥ** oṣhadhayah, **vowels** 23, **chhandah** nichṛid aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**2. svaado pito madho pito vayan tvaa vavṛimahe,
asmaakamavitaa bhava.**

Rig 1:24:187:2

svaado pito madho pito vayan tvaa vavṛimahe, asmaakam avitaa bhava.

(पितो) हे रक्षक अन्न! तू (स्वादो) स्वादिष्ट व रुचिकर है । (पितो) हे अन्न! तू (मधो) ओषध गुण वाला है । (वयम्) हम (त्वा) तुझे (ववृमहे) स्वीकार करते हैं । तू (अस्माकम्) हमारी (अविता) रक्षा करने वाला (भव) हो !

तीसरे मन्त्र में कल्याणकारी अन्न के प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होने के लिए प्रार्थना है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । ३१ अक्षराणि । निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

उप' नः पित॒वा चर' शिवः शि॒वाभि॑रू॒तिभिः॑ ।

म॒य॒भुः'द्विषे॑ण्यः सखा' सु॒शेवो॑ अ॒द्वयाः॑ ॥३॥

ऋग् १:२४:१८७:३

उप' । नः । पितो इति । आ । चर । शिवः । शिवाभिः । ऊतिऽभिः ॥

मयःऽभुः । अद्विषेण्यः । सखा । सुशेवः । अद्वयाः ॥३॥

(पितो) हे रक्षक अन्न! तू (शिवः) कल्याणकारी होता हुआ (शिवाभिः) कल्याण करने वाले (ऊतिऽभिः) रक्षा साधनों के साथ (नः) हमें (आ) भली प्रकार (उप) समीपता से (चर) प्राप्त हो । तू हमारे (मयःऽभुः) सुख को बढ़ाने वाला होकर हमें (अद्वयाः) मानसिक द्वन्दों व (अद्विषेण्यः) द्वेष आदि वृत्तियों से दूर रखने वाला हो । हमारा (सखा) मित्र बन तू हमें (सुशेवः) उत्तम सुख प्रदान कर ।

चौथे मन्त्र में अन्न के रसों से सब अंगों के पोषण के लिए प्रार्थना है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । २२ अक्षराणि । विराडार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

तव॑ त्ये पि॒तो रसा॑ रजा॒स्यनु॑ वि॒ष्ठिताः॑ । दि॒वि वाता॑इव श्रि॒ताः॑ ॥४॥

ऋग् १:२४:१८७:४

तव' । त्ये । पितो इति । रसाः । रजांसि । अनु । विऽस्थिताः ॥ दिवि । वाताःऽइव । श्रिताः ॥४॥

(पितो) हे रक्षक अन्न! (इव) जैसे (दिवि) आकाश में (वाताः) वायु (श्रिताः) विद्यमान है वैसे ही (तव) तेरे (त्ये) ये (रसाः) रस इस (रजांसि) शरीर के सब अंगों में (अनु) (विऽस्थिताः) स्थित रहें ।

पाँचवे मन्त्र में अन्न दान से स्वाभिमान में वृद्धि होने का वर्णन है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । ३१ अक्षराणि । निचृदार्ष्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

तव॑ त्ये पि॒तो दद॑तस्तव॑ स्वादिष्ट॑ ते पि॒तो ।

प्र स्वा॒द्यानो॑ रसानां॑ तुवि॒ग्रीवा॑ इवेरते ॥५॥

ऋग् १:२४:१८७:५

तव' । त्ये । पितो इति । ददतः । तव' । स्वादिष्ट । ते । पितो इति ॥

प्र । स्वाद्यानः । रसानाम् । तुविग्रीवाःऽइव । ईरते ॥५॥

(pito) **O food! You are (svaado) delicious and pleasing. (pito) O food! You are (madho) nourishing and healing. (vayam) We (vavṛimahe) happily accept (tvaa) you. (bhava) May you (avitaā) sustain and protect (asmaakam) us!**

In the third mantra the sage offers a prayer for the abundance of the auspicious grains. **ṛiṣhiḥ** agastyah, **devataah** oṣhadhayah, **vowels** 31, **chhandah** nichṛid aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaarah.

**3. upa naḥ pitavaa chara shivah shivaabhootibhiḥ,
mayobhuradviṣhenyah sakhaa sushevo advayaah.**

Rig 1:24:187:3

upa naḥ pito aa chara shivah shivaabhiḥ ootibhiḥ,
mayobhuḥ adviṣhenyah sakhaa sushevaḥ advayaah.

(pito) **O Food! May you be (shivah) auspicious and be (aa) abundantly (chara) available (upa) near (naḥ) us along with the (shivaabhiḥ) benevolent (ootibhiḥ) protections for our body and mind! May you provide us (mayobhuḥ) happiness and keep us away from (advayaah) mental conflicts and (adviṣhenyah) vices like animosity! May you be our (sakhaa) friend and bring us (sushevaḥ) immense happiness!**

In the fourth mantra the sage prays for the nourishment of all bodily organs from the food.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataah** oṣhadhayah, **vowels** 22, **chhandah** viraad aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**4. tava tye pito rasaa rajaansyanu viṣṭhitaah,
divi vaataaiva shrutaah.**

Rig 1:24:187:4

tava tye pito rasaah rajaansi anu viṣṭhitaah, divi vaataah iva shrutaah.

(pito) **O Food! (iva) As the (vaataah) air is always (shrutaah) available in the (divi) sky, may (tava) your (tye) (rasaah) nourishing juices (anu) (viṣṭhitaah) be available to all of the organs of our (rajaansi) bodies.**

In the fifth mantra the sage mentions that consuming food after sharing it with others increases one's self confidence.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataah** oṣhadhayah, **vowels** 31, **chhandah** nichṛid aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaarah.

**5. tava tye pito dadatastava svaadiṣṭha te pito,
pra svaadmaano rasaanaan tuvigreevaa iverate.**

Rig 1:24:187:5

tava tye pito dadataḥ tava svaadiṣṭha te pito,
pra svaadmaanah rasaanaam tuvigreevaah iva eerate.

(पितो) हे रक्षक अन्न! (त्ये) जो (तव) तेरा (ददतः) दान करने का बाद बचे हुए (स्वादिष्ठ) स्वादिष्ठ (पितो) अन्न को (स्वाद्यानः) प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करते हैं, (तव) तेरे (रसानाम्) रसों के पोषण व (प्र) (ईरते) प्रेरणा से (ते) उनकी (तुविग्रीवाः) (इव) गर्दन स्वाभिमान से उठी रहती है ।

छठा वर्ग समाप्त हुआ । सातवे वर्ग का आरम्भ होता है ।

छठे मन्त्र में जैसा अन्न वैसा मन उक्ति का भाव है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । २९ अक्षराणि । भुरिगार्घ्युष्णिक् छन्दः । ऋषभः स्वरः ।

त्वे पितो महानां देवानां मनो हितम् ।

अकारि चारुं केतुना तवाहिमवसावधीत् ॥६॥

ऋग् १:२४:१८७:६

त्वे इति । पितो इति । महानाम् । देवानाम् । मनः । हितम् ॥

अकारि । चारुं । केतुना । तव । अहिम् । अवसा । अवधीत् ॥६॥

(पितो) हे रक्षक अन्न! (त्वे) तेरी (महानाम्) पवित्रता और (देवानाम्) दिव्यगुणों से (मनः) मन का (हितम्) हित होता है और (चारु) सुन्दर अन्तःकरण का (अकारि) निर्माण होता है । (तव) तेरे (अवसा) रक्षण व तुझसे प्रेरित (केतुना) ज्ञान से तेरा सेवन करने वाला (अहिम्) सर्प समान वासनादि वृत्तियों को (अवधीत्) नष्ट करता है ।

सातवे मन्त्र में प्राकृतिक साधनों से उत्पन्न हुए अन्न की श्रेष्ठता पर विचार किया गया है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । २९ अक्षराणि । भुरिगार्घ्युष्णिक् छन्दः । ऋषभः स्वरः ।

यददो पितो अजगन् विवस्व पर्वतानाम् ।

अत्रा चिन्नो मधो पितोऽरं भक्षाय गम्याः ॥७॥

ऋग् १:२४:१८७:७

यत् । अदः । पितो इति । अजगन् । विवस्व । पर्वतानाम् ॥

अत्र । चित् । नः । मधो इति । पितो इति । अरम् । भक्षाय । गम्याः ॥७॥

(पितो) हे रक्षक अन्न! (यत्) जब तुझे (विवस्व) बिजली चमकाने वाले (पर्वतानाम्) बादलों का (अदः) वह पवित्र जल (अजगन्) प्राप्त होता है, उस जल की (मधो) मधुरता को (चित्) निश्चय से आत्मसात करने वाला (पितो) अन्न (अत्र) यहाँ (नः) हमारे (भक्षाय) भोजन के लिए (अरम्) पर्याप्त मात्रा में (गम्याः) प्राप्त हो ।

आठवे मन्त्र में पकाए गए रुचिकर भोजन के महत्त्व का वर्णन है ।

O (svaadiṣṭha) delicious (pito) food! (tye) Those who first (dadataḥ) share (tava) you with others and then (svaadmaanaḥ) happily enjoy the remainder, their self confidence is boosted by (tava) your (rasaanaam) nourishment and (pra) (eerate) inspiration and (te) they (tuvigreevaah) (iva) hold their heads high.

Here ends the sixth Varga and the seventh Varga begins.

In the sixth mantra the sage emphasizes that the purity of food accentuates the purity of mind.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataaḥ** oṣhadhayah, **vowels** 29, **chhandah** bhurig aarṣhy uṣṇik, **svarah** ṛiṣhabhah.

**6. tve pito mahaanaan devaanaam mano hitam,
akaari chaaru ketunaa tavaahimavasaa'vadheet.**

Rig 1:24:187:6

tve pito mahaanaam devaanaam manah hitam,
akaari chaaru ketunaa tava ahim avasaa avadheet.

(pito) O Food! (tve) Your (mahaanaam) purity and (devaanaam) divine qualities (hitam) benefit (manah) the mind and help in (akaari) formation of (chaaru) beautiful thoughts. (tava) Your (avasaa) protection and (ketunaa) the knowledge inspired by you helps the consumer (avadheet) destroy (ahim) serpent like vices.

In the seventh mantra the sage discusses the importance of natural irrigation in the production of grains.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataaḥ** oṣhadhayah, **vowels** 29, **chhandah** bhurig aarṣhy uṣṇik, **svarah** ṛiṣhabhah.

**7. yadado pito ajaganivasva parvataanaam,
atraa chinno madho pito'ram bhakṣhaaya gamyaah.**

Rig 1:24:187:7

yat adaḥ pito ajaganivasva parvataanaam,
atra chit nah madho pito aram bhakṣhaaya gamyaah.

(pito) O Food! (yat) When you are (ajagan) irrigated by the pure water coming from the (vivasva) lightning and thundering (parvataanaam) clouds, you (chit) definitely absorb the sweetness of (adaḥ) those waters. May such (madho) sweet (pito) grains be (aram) abundantly (gamyaah) available for (nah) our (bhakṣhaaya) consumption (atra) here in this World!

In the eighth mantra the sage discusses the importance of properly cooked appetizing meals.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataaḥ** oṣhadhayah, **vowels** 23, **chhandah** nichṛid aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । २३ अक्षराणि । निचृदार्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

यदुपामोषधीनां परिशमार्शिमहे । वातापे पीव इद्धव ॥८॥

ऋग् १:२४:१८७:८

यत् । उपाम् । ओषधीनाम् । परिशम् । आऽरिशमहे ॥ वातापे । पीवः । इत् । भव ॥८॥

(वातापे) हे वायु समान सर्वत्र व्याप्त ईश्वर! (यत्) जब हम (परिशम्) उचित मात्रा में (अपाम्) जल, (ओषधीनाम्) सब्जियाँ और घी आदि लेकर पकाए गए (आऽरिशमहे) रुचिकर भोजन ग्रहण करे, वह भोजन (इत्) निश्चय से हमारे (पीवः) बल में वृद्धि करने वाला (भव) हो ।

नौवे मन्त्र में भोजन में दूध आदि के महत्त्व का वर्णन है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । २४ अक्षराणि । आर्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

यत्ते सोम गवांशिरो यवांशिरो भजामहे । वातापे पीव इद्धव ॥९॥

ऋग् १:२४:१८७:९

यत् । ते । सोम । गोऽआशिरः । यवऽआशिरः । भजामहे ॥ वातापे । पीवः । इत् । भव ॥९॥

(वातापे) हे वायु समान सर्वत्र व्याप्त ईश्वर! (सोम) हे सौम्य भोजन! (यत्) जब हम (गोऽआशिरः) गाय के दूध और (यवऽआशिरः) जौ आदि ओषधियों से पूरित भोजन (भजामहे) ग्रहण करे (ते) वह भोजन (इत्) निश्चय से हमारे (पीवः) बल में वृद्धि करने वाला (भव) हो ।

दसवे मन्त्र में भोजन से स्वास्थ्य वर्धन का वर्णन है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । २४ अक्षराणि । आर्षी गायत्री छन्दः । षड्जः स्वरः ।

करम्भ ओषधे भव पीवो वृक्क उदारथिः । वातापे पीव इद्धव ॥१०॥

ऋग् १:२४:१८७:१०

करम्भः । ओषधे । भव । पीवः । वृक्कः । उदारथिः ॥ वातापे । पीवः । इत् । भव ॥१०॥

(ओषधे) हे रोगों के नाशक (करम्भः) दही मिश्रित जौ के सत्तू! तू हमारे लिए (पीवः) पौष्टिक (भव) हो और हमें (वृक्कः) रोगों से दूर रख हमारे (उदारथिः) स्वास्थ्य को बढ़ा । (वातापे) हे वायु समान सर्वत्र व्याप्त ईश्वर! यह भोजन (इत्) निश्चय से हमारे (पीवः) बल में वृद्धि करने वाला (भव) हो ।

ग्यारहवे मन्त्र में भोजन को मिल बाँटकर खाने का निर्देश है ।

अगस्त्य ऋषिः। ओषधयो देवताः । ३४ अक्षराणि । स्वराडार्घ्यनुष्टुप् छन्दः । गान्धारः स्वरः ।

तं त्वा वयं पितो वचोभिर्गावो न हव्या सुषूदिम ।

देवेभ्यस्त्वा सध्रमादमस्मभ्यं त्वा सध्रमादम् ॥११॥

ऋग् १:२४:१८७:११

**8. yadapaamoṣhadheenaam pariñshamaarishaamahe,
vaataape peeva idbhava.**

Rig 1:24:187:8

yat apaam oṣhadheenaam pariñsham aarishaamahe, vaataape peevaḥ it bhava.

(vaataape) **O all pervading God like air! (yat) When we (aarishaamahe) partake in a well cooked delicious meal prepared (pariñsham) using proper proportions of (apaam) water, (oṣhadheenaam) vegetables and butter etc., may that food (it) definitely (bhava) (peevaḥ) increase our strength!**

In the ninth mantra the sage discusses the importance of milk and other herbs in the food. **ṛiṣhiḥ** agastyah, **devataah** oṣhadhayah, **vowels** 24, **chhandah** aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**9. yatte soma gavaashiro yavaashiro bhajaamahe,
vaataape peeva idbhava.**

Rig 1:24:187:9

yat te soma go aashirah yava aashirah bhajaamahe, vaataape peevaḥ it bhava.

(vaataape) **O all pervading like air! (soma) O calming food! (yat) When we (bhajaamahe) consume food nourished with the (aashirah) essence of (go) cow's (aashirah) milk and herbs and grains like (yava) barley, may (te) that food (it) definitely (bhava) (peevaḥ) increase our strength!**

In the tenth mantra the sage discusses the medicinal value of food.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataah** oṣhadhayah, **vowels** 24, **chhandah** aarṣhee gaayatree, **svarah** ṣhadjah.

**10. karambha oṣhadhe bhava peevo vṛikka udaarathiḥ,
vaataape peeva idbhava.**

Rig 1:24:187:10

karambhaḥ oṣhadhe bhava peevaḥ vṛikkaḥ udaarathiḥ,
vaataape peevaḥ it bhava.

(oṣhadhe) **O remover of sickness, (karambhaḥ) roasted flour of barley mixed with yogurt! (bhava) May you (peevaḥ) nourish us, (vṛikkaḥ) keep us away from sickness and (udaarathiḥ) increase our health! (vaataape) O all pervading like air! May this food (it) definitely (bhava) (peevaḥ) increase our strength!**

In the eleventh mantra the sage advises to share food with others.

ṛiṣhiḥ agastyah, **devataah** oṣhadhayah, **vowels** 34, **chhandah** svaraad aarṣhy anuṣṭup, **svarah** gaandhaarah.

**11. tan tvaa vayam pito vachobhirgaavo na havyaa suṣhoodima,
devebhyastvaa sadhamaadamasmabhyan tvaa sadhamaadam.**

Rig 1:24:187:11

तम् । त्वा । वयम् । पितो इति । वचःऽभिः । गावः । न । हव्या । सुसूदिम् ॥

देवेभ्यः । त्वा । सधऽमादम् । अस्मभ्यम् । त्वा । सधऽमादम् ॥११॥

(पितो) हे रक्षक अन्न! (वचःऽभिः) वेदों के वचनों के अनुसार (वयम्) हम (गावः) गायों से प्राप्त दूध, दही, घी आदि (न) और (त्वा) तेरे (तम्) उन अन्य (हव्या) सात्विक पदार्थों का सेवन कर अपने (सुसूदिम्) शरीर को रोगों से दूर रखें । हम (देवेभ्यः) विद्वानों के साथ मिलकर (त्वा) तेरा (सधऽमादम्) आनन्द लें । (त्वा) तू (अस्मभ्यम्) हमें (सधऽमादम्) आनन्द देने वाला हो ।

सातवा वर्ग समाप्त हुआ ।

Rigveda - Maṇḍala 1 Anuvaaka 24, Sookta 187; Aṣṭaka 2 Adhyaaya 5 Varga 6 - 7

tam tvaa vayam pito vachobhiḥ gaavaḥ na havyaa suṣhoodima,
devebhyaḥ tvaa sadhamaadam asmabhyam tvaa sadhamaadam.

(pito) O Food! In accordance with the (vachobhiḥ) Vedic wisdom, may (vayam) we consume various (gaavaḥ) dairy products provided by cows and (tam) (tvaa) other (havyaa) satvik foods (na) as well and (suṣhoodima) keep our bodies free from sickness! May we (sadhamaadam) enjoy (tvaa) you in the company of (devebhyaḥ) scholars! May (tvaa) you bring (asmabhyam) us (sadhamaadam) bliss and happiness!

Here ends the seventh Varga.